International Journal of Multidisciplinary Research and Development 2014; 1(7): 361-362

International Journal of Multidisciplinary Research and Development

IJMRD 2014; 1(7): 361-362
www.allsubjectjournal.com
Received: 01-12-2014
Accepted: 20-12-2014
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979

टेकचन्द मीणा
सहायक आचार्य
संस्कृतविभाग,
दिल्लीविश्वविद्यालय,
दिल्ली–110007

Correspondence:
टेकचन्द मीणा
सहायक आचार्य
संस्कृतविभाग,
दिल्लीविश्वविद्यालय,
दिल्ली–110007

रूपगोस्वामी का गौण भक्तिरस विचार

टेकचन्द मीणा

आचार्य रूपगोस्वामी ने भक्तिरसामृतसिन्धु के पश्चिम एवं दक्षिण विभाग में पूर्वप्रतिपादित भक्तिरस के दो भेद मुख्य भक्तिरस एवं गौण भक्तिरस का क्रमशः वर्णन किया है।

मुख्य भक्ति रस के पाँच भेद तथा गौण भक्ति रस के सात भेद किये हैं। उनमें मुख्य भक्तिरसμशान्त, प्रीति, प्रेयान्, वत्सल तथा मधुर हैं। तथा गौण भक्तिरस–हास्य, अद्भुत, वीर, करुण, रौद्र, भयानक तथा बीभत्स हैं।

इन पाँच भेदों में काव्यशास्त्रीय परम्परा प्राप्त शान्त और श्रृर्धीर दो रस भेदों का समावेश है परन्तु हास्यादि रसों का भक्तिरस में क्या स्थान है? भक्ति रस समुद्र में क्या सभी रसों का समावेश सम्भव नहीं है? इन सभी जिज्ञासाओं के शमन हेतु दो उपाय किये। प्रथम तो हासादि सात भावों का स्थायित्व स्वीकार न कर उन्हें भक्ति में व्यभिचारिभाव समझने चाहिए अर्थात् जिस प्रकार काव्यशास्त्रा में भक्ति को रस न मानकर भाव श्रेणी में रखा है उसी प्रकार भक्ति में हासादि को भी भावत्व प्रतिपादित किया है। द्वितीय उपाय इन सभी को भी रसत्व के रूप में स्वीकार किया। हृदय से तो आचार्य रूपगोस्वामी को पूर्वमत ही अर्धीकार हैμ

अमी पञ्चैव शान्ताद्या हरेर्भक्तिरसा मताः।
एषु हासादयः प्रायो बिभ्रति व्यभिचारिताम्।।[1]

गौण नामक सात भेद तो काव्यपरम्परा, खण्डित न हो तदर्थ स्वीकृत किये गयेμ

हास्यादीनां रसत्वं यद्गौणत्वेनापि कीर्तितम्।
प्राचां मतानुसारेण तद् विज्ञेयं मनीषिभिः।।[2]

पांच मुख्य रसों का तो आश्रय नियत होता है जैसे शान्त भक्तिरस का शान्तभक्त, प्रीतिभक्तिरस का दास्यभक्त, प्रेयोभक्तिरस का सख्यभक्त, वत्सलभक्तिरस का वत्सलभक्त तथा मधुरभक्तिरस का मधुरभक्त। परन्तु ये सात भक्ति रस इन पांच प्रकार के भक्तों में अनियत सम्बन्ध से कदाचित् उद्भूत होते हैं। ये सात गौण रस तभी भक्तिरस के रूप में स्वीकृत होते हैं जब स्थायिभाव कृष्णरति हो। श्रीकृष्ण के बिना भक्तिरस की कोटि में परिगणित नहीं होते हैं। यद्यपि श्रीकृष्णभक्ति सामान्यतः हासोत्साहादि का प्राकृतरस स्थायिको तथा इनसे निष्पन्न हास्य–वीरादि रसों की अपेक्षा नहीं करती है तथापि जब इनका कृष्णरति से येन केन प्रकारेण सम्बन्ध होता है तब हास्यभक्तिरस, वीरभक्तिरस इत्यादि रूपों में जाने जाते हैं।

1. हास्य रसμ श्रीकृष्ण और उनसे सम्बन्धित कोई भी विषयालम्बन, आलम्बन के वेश, चरितादि उद्दीपन विभाव, नाक, ओठ तथा गालों का पफड़कना आदि अनुभाव तथा हर्ष, आलस्य, अवहित्था आदि व्यभिचारिभाव समझना चाहिए। हास्यरति स्थायिभाव तथा इसके छः प्रकार होते हैं–स्मित, हसित, विहसित, अविहसित, अपहसित तथा अतिहसित।[3]

2 अद्भुत रसμ साक्षात् तथा अनुमित भेद से दो प्रकार का अद्भुत रस, विभावादि भक्तिरस में भी काव्यशास्त्रा सामान्य होते हैं इसमें कोई विशेष नहीं है।

3. वीर रस– काव्यशास्त्रा के समान भक्ति वीररस भी यु(वीर, दयावीर, दानवीर, और धर्मवीर से चार प्रकार का होता है। परन्तु यु(वीर में श्रीकृष्ण का सुहृद ही आलम्बन विभाव प्रतिपादित है शत्रुओं को नहीं स्वीकृत किया है। इस मान्यता में यह तर्क है कि सुहृदों के साथ श्रीकृष्ण का यु(भक्तों के लिए उत्साहदायक होता है परन्तु शत्रुओं के साथ यु(तो भक्तों के लिए क्षोभकर होता है और इसके कारण रौद्र आलम्बन होवे।

सुहृदेव प्रतिभटो वीरे कृष्णस्य न त्वरिः।
स भक्तक्षोभकारित्वाद्रौद्रे त्वालम्बनो रसः।।[4]

दानवीर के नवीन दो भेद बहुप्रद तथा उपस्थित दुरापार्थ त्यागी जो कृष्ण के सुख के लिए सहसा अपना सर्वस्व भी दान कर सकता है वह बहुप्रद दानवीर कहलाता है। जो सन्तुष्ट हुए भगवान् के द्वारा दिये जानेवाले सहस्थिति आदि रूप वर जिसको नहीं चाहता है उसे उपस्थित दुरापार्थत्यागी दानवीर कहते हैं।

4. करुण रस

यहाँ श्रीकृष्ण, उनके प्रिय ;भक्तद्ध और कृष्णभक्ति सुख से रहित इस प्रकार ये तीन इसके विषय होने से आलम्बन विभाव कहे जाते हैं।[अ] अन्य विभावादि सामान्य होते हैं। उनमें से कृष्ण के आलम्बन विभाव होने का उदाहरण जैसे दशम स्कन्ध में[μ]

तं नागभोगपरिवीतमदृष्टचेष्ट–
मालोक्य तत्प्रियसखाः पशुपा भृशार्त्ताः।
कृष्णे{र्पितात्मसुहृदर्थकलत्रकामा–
दुःखाभिशोकभयमूढधियो निपेतुः।।[अपप]

इस प्रकार यहाँ कालिया नाग के द्वारा प्रिय कृष्ण के विषय में अनिष्ट शघड्डा प्रदर्शित है। लीलाशक्ति, श्रीकृष्ण की सघड्डटापन्न दशा तथा अनिष्ट शघड्डा भक्तों में शोकरति को उद्बु(कर करुणरस का आस्वादन कराती है। हासादि अन्य रसों की उत्पत्ति कभी–कभी कृष्णविषयकरति के बिना भी हो सकती है किन्तु यह शोक कृष्णविषयक रति के बिना कभी भी सम्भव नहीं हो सकता है। रति के न्यूनाध्क्यि के कारण शोक में भी न्यूनाध्किता हो सकती है। रति के साथ अविनाभूत रति के बिना न रह सकने के कारण इस शोकरति या करुण रस में अन्य रसों की अपेक्षा कुछ विशेषता रहती है।[अपप]

5. रौद्र रस– इस रस में श्रीकृष्ण, उनके प्रिय ;मित्राादिद्ध तथा शत्राु ये तीन क्रोध् के विषयालम्बन होते हैं। कृष्ण के मित्रा तथा शत्राु के विषय में क्रोध् के आश्रय अर्थात् उन पर क्रोध् करनेवाले सभी प्रकार के भक्त हो सकते हैं।[अपपप] मित्रा के क्रोध् का विषय– ध्यान न देनेवाला, साहसी और ईर्ष्यालु ये तीन प्रकार के होते हैं।[पग] इस रस में क्रोध्रति स्थायिभाव होता है जो कोप, मन्यु तथा रोष भेदों से क्रोध् तीन प्रकार का होता है। इनमें शत्राु के प्रति कोप, बांध्वों के प्रति मन्यु तथा स्त्रिायों के प्रति रोष कहे जाते हैं। प्रियतम के प्रति स्त्रिायों का ;क्रोध्द्ध रोष स्थिर न होने से यह व्याभिचारिभाव कहलाता है।[ग]

6. भयानक रस[μ] कृष्ण और अन्य भयानक लोग ;दारूणद्ध इस रस में आलम्बन विभाव होते हैं। दारूण लोग भयजनक वस्तुओं के दर्शन से, श्रवण से तथा स्मरण से, भय के आलम्बन विभाव होते हैं। आकृति से भीषण पूतना आदि, प्रकृति से भयघड्डर दुष्ट शिशुपालराजादि तथा प्रभाव से भयघड्डर इन्द्र तथा शिव आदि हैं। भगवान् श्रीकृष्ण से अत्यन्त भय की प्राप्ति होने वाले कंस आदि रतिशून्य होने के कारण इस रस में आलम्बन विभाव नहीं माने जाते हैं।[गप]

7. बीभत्स रस[μ] अपने अनुरूप विभावादि के द्वारा पुष्टि को प्राप्त हुई जुगुप्ता रति ही इस बीभत्स भक्तिरस नाम से कही जाती है। इसमें मुँह को सिकोड़ना, थूकना, नाक बन्द कर लेना, भागना, काँपना और रोमा×च हो जाना, पसीना आ जाना आदि विकार अर्थात् अनुभाव होते हैं। जुगुप्सा रति इसमें स्थायिभाव होती है और वह प्रायिकी अर्थात् सब में पायी जाने वाली तथा विवेकजा दो प्रकार की होती है।[गपप] आचार्य रूपगोस्वामी ने अन्त में स्पष्ट कहा है कि हास्यादि का जो गौणरूप में भी वर्णन किया है वह प्राचीनों के मतानुसार ही किया है, हमारे अपने मत में तो वास्तव में शान्त आदि प्रकार के मुख्य भक्ति रस ही कृष्ण भक्ति के रस हैं। हास्यादि गौण रस इनमें व्यभिचारिभावत्व को प्राप्त होते हैं।

[1] भरसि. 4/7/9
[2] वही, 4/7/8
[3] भरसि., 4/1/6, 8, 9, 10
[4] भरसि. 4/3/12
[अ] वही, 4/4/3
[vi] वही, 4/4/8, उदा. 940
[अपप] रतिं विना{पि घटते हासादेरुद्गमः क्वचित्।
कदाचिदपि शोकस्य नास्य सम्भावना भवेत्।।
रतेर्भूम्ना क्रशिम्ना च शोको भूयान् कृशश्च सः।
रत्या सहाविनाभावात्काप्येतस्य विशिष्टता।। भरसि. 4/4/9,10
[अपपप] वही, 4/5/1,2
[पग] हितस्त्राध{नवहितः साहसी चेर्ष्युरित्यपि। वही, 4/5/5
[ग] कोपो मन्युस्तथा रोषस्तत्रा कोपस्तु शत्राुगः।
मन्युर्बन्ध्षु ते पूज्यसमन्यूनास्त्रिाधेदिताः।।
रोषस्तु दयिते स्त्राीणामतो व्यभिचरत्यसौ। वही, 4/5/15
[गप] आकृत्या पूतना{{द्याः स्यु प्रकृत्या दुष्टभूभुजः।
भीष्णास्तु प्रभावेण सुरेन्द्रगिरिशादयः।।
सदा भगवतो भीतिं गता आत्यन्तिकीमपि।
कंसाद्या रतिशून्यत्वादत्रा नालम्बना मताः।। भरसि. 4/6//10,11
[गपप] अत्रा निष्ठीवनं वक्त्राकूणनं घ्राणसंवृतिः।
धवनं कम्पपुलकप्रस्वेदाद्याश्च विक्रियाः।
जुगुप्सारतिरत्रा स्यात्स्थायी सा च विवेकजा। वही, 4/7/2,4